

प्रधान मन्त्री, अणु शक्ति मंत्री तथा योजना मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गाँधी) : (क) से (घ). राज्य सरकार से सूचना की प्रतीक्षा की जा रही है।

CORRECTION OF ANSWER TO UNSTARRED QUESTION NO. 4196 DATED 11-12-1968 REGARDING GRANT OF LOAN BY FILM FINANCE CORPORATION, BOMBAY TO CERTAIN FILMS RELEASED BY CENTRAL BOARD OF FILM CENSORS.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING AND COMMUNICATIONS (SHRI I. K. GUJRAL): In answer to part (b) of the Unstarred Question No. 4196 given on 11th December, 1968, it was stated that the films 'Charulata', 'Saat Pake Bandha', 'Majhli Didi' and 'Panchaswar' were granted loans by the Film Finance Corporation, Bombay. The Film 'Devar' in Hindi was also granted loan by the Film Finance Corporation, Bombay. The inconvenience caused to the House is regretted.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

PROPAGANDA BY MOSCOW 'PEACE AND PROGRESS RADIO' AGAINST CERTAIN POLITICAL PARTIES IN INDIA

श्री अटलबिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं अबिलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर नये वैदेशिक-कार्य मन्त्री का ध्यान दिलाना चाहता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :-

“मास्को शान्ति तथा प्रगति रेडियो द्वारा भारत के कुछ राजनीतिक दलों के विरुद्ध प्रचार की ओर, जोकि देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप है,”

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI DINESH SINGH): Sir, Radio Peace and Progress located in U. S. S. R., has from time to time criticised the Indian political parties and personalities in its broadcasts. The Government have drawn the attention of the Soviet Government to such references by the Radio Peace & Progress. The Soviet Government have taken the position that this Radio Station is not a Government concern but an independent organisation. They have drawn our attention to many statements and publications appearing in India which are critical of the Soviet leaders and Soviet policies and stated that their official Radio Stations and newspapers do not criticize our government or make references to which Government could take exception.

The Government have noticed that in the critical references towards India Radio Peace & Progress make considerable use of quotations from the Indian newspapers.

In view of some of the critical broadcasts on Radio Peace & Progress during the recent elections, the Government have again brought the matter to the notice of the Soviet authorities.

श्री अटलबिहारी वाजपेयी : क्या भारत सरकार सोवियट सरकार के इस कथन से सहमत है कि रेडियो पीस एन्ड प्रोग्रेस यह एक स्वतंत्र संस्थान है और उस पर सोवियत सरकार का नियंत्रण नहीं है ? सोवियट रूस की शासन व्यवस्था और समाज व्यवस्था से परिचित सभी व्यक्ति जानते हैं कि सोवियट रूस में जो कुछ भी होता है वह सरकार के नियंत्रण में और निर्वेश पर होता है। क्या भारत सरकार इस तथ्य से अनभिज्ञ है और अगर अनभिज्ञ नहीं है तो केवल सोवियट सरकार का ध्यान दिलाने के बजाय इस मामले में भारत सरकार ने अभी तक कोई विरोध पत्र क्यों नहीं भेजा है ?

हम सोवियट रूस के मित्र हैं और मित्रता के उन सम्बन्धों को मजबूत करना

चाहते हैं लेकिन मित्रता का आधार हमारे घरेलू मामलों में खुला हस्तक्षेप नहीं हो सकता। जब सोवियट सरकार इस तरीके का हस्तक्षेप करेगी तो हमें उसका विरोध करना होगा और अगर हमारी सरकार उस हस्तक्षेप का सामना व विरोध नहीं करती तो हमें यह कहने के लिए विवश होना पड़ेगा कि हमारी सरकार सोवियट रूस के पिछ-लग्गून का परिचय दे रही है।

उपाध्यक्ष महोदय, प्रश्न केवल मास्को 'पीस एन्ड प्रोग्रेस' का ही नहीं है बल्कि इस चुनाव के दौरान में मास्को रेडियो ने ऐसे ब्रौडकास्ट किये हैं जिनमें भारत के राजनीतिक दलों की आलोचना की गई। मैं उद्धरण देना चाहता हूँ। जनवरी 23, 1969 को मास्को रेडियो ने अपने बंगला समाचारों में साढ़े 4 बजे एक प्रसारण किया जिसमें भारतीय जनसंघ पर आक्षेप किये गये। मेरा नाम लेकर आलोचना की गई और कहा गया कि हम साम्राज्यवाद के हित में भारत की विदेश नीति को बदलना चाहते हैं। अभी तक सोवियत सरकार 'पीस एन्ड प्रोग्रेस' रेडियो की आड़ में हमारे घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करती थी लेकिन अब उसने वह नकाब उतार कर फेंक दिया है और मास्को रेडियो से इस तरह के प्रसारण किये जा रहे हैं। एक दूसरा प्रसारण जनवरी 27, 1969 को किया गया जो कि 4 बजे था और जिसमें श्री शंकराचार्य महोदय का नाम लिया गया और कहा गया कि प्रतिक्रियावादी ताकतें मध्यावधि चुनावों के पूर्व गऊ के नाम पर कोई आन्दोलन करना चाहती हैं।

मैं जानना चाहता हूँ कि क्या मन्त्री महोदय के ध्यान में रेडियो मास्को के यह प्रसारण नहीं हैं? केवल जनसंघ पर आक्षेप नहीं किया जा रहा है। रेडियो पीस एन्ड प्रोग्रेस ने 10 फरवरी 1969 को एक प्रसारण किया जिसमें कांग्रेस अध्यक्ष श्री निर्जलिगप्पा पर हमला किया गया है। एक बार श्री मोरार

जी देसाई और श्री पाटिल पर आक्रमण हो चुका है और अब श्री निर्जलिगप्पा को आक्रमण के लिए छांटा गया है। मैं शब्दों को उद्धृत करना चाहता हूँ :

"At a pre-election meeting in Patna (India) Mr. Nijalingappa has made a speech which has infuriated all honest people."

यह ओनैस्ट पीपुल कहां रहते हैं? क्या रूस में उसके बाद श्री निर्जलिगप्पा के बारे में कहा गया है कि वह भी भारत की विदेश नीति को बदलना चाहते हैं और स्वर्गीय नेहरूजी जो कुछ करना चाहते थे उस सब को उलटना चाहते हैं?

उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न स्पष्ट है और मैं फिर उसे दुहराना चाहूंगा कि क्या भारत सरकार सोवियट सरकार के उम कथन से सहमत है कि रेडियो पीस एन्ड प्रोग्रेस का सोवियट सरकार से कोई सम्बन्ध नहीं है?

दूसरी बात क्या मास्को रेडियो का प्रसारण उसके ध्यान में आया है?

सोवियत रूस दूसरे देशों के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करने के बारे में घोषणायें करता रहता है, वह नान-अलाइनमेंट की नीति का हिमायती बनता है, जिसका आधार यह है कि हर एक देश की स्वतंत्रता और सर्व-प्रभुता का समादर किया जायेगा और किसी के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा।

मैं जानना चाहता हूँ कि भारत सरकार इस बारे में सोवियट रूस को औपचारिक रूप से विरोध-पत्र क्यों नहीं भेजती, और यह चेतावनी क्यों नहीं देती कि अगर इस तरह का हस्तक्षेप जारी रहा तो हमारे और सोवियट सरकार के सम्बन्धों में तनाव पैदा होगा?

श्री विनेश सिंह : माननीय सदस्य ने जिन सिद्धान्त की बातों का उल्लेख किया है मैं उन से सहमत हूँ कि एक देश को दूसरे देश के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, लेकिन जहाँ तक अपने विचारों को प्रकट करने का सम्बन्ध है, उस में कुछ फर्क आता है। माननीय सदस्य जानते हैं कि बहुत से देश हमारे करीब हैं, जो अपने विचार रेडियो पर और अखबारों में प्रकट करते हैं, जो हमारे अनुकूल नहीं हैं, या जो हमारी संस्थाएँ हैं अथवा जो हमारी राजनीतिक बनावट है, उसके खिलाफ भी बातें करते हैं, उन्हें बहुत कुछ कहते हैं, जिनको हम पसन्द नहीं करते हैं। लेकिन हम लोगों के यहाँ अपने अपने देशों के अलग अलग तरीके हैं, और हमको उनके हिसाब से चलना पड़ता है। जहाँ तक एक देश से दूसरे देश के सम्बन्धों का ताल्लुक है, हमें एक जाब्ते से, एक तरीके से काम करना होता है। जो दूसरा देश करता है उसको हम पसन्द करते हैं या नापसन्द करते हैं, इसका सवाल नहीं है। सवाल इसका है कि हम जाब्ते से, कायदे से क्या चीज कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते हैं। एक देश की सरकार जब हम से कहती है कि उसका नियन्त्रण—मैं सम्बन्ध की बात नहीं कर रहा हूँ, नियन्त्रण की बात कह रहा हूँ—उसके इस रेडियो पर नहीं है, तब हम कैसे कह सकते हैं कि नहीं आपका उस पर नियन्त्रण है, चाहे वह बात हमारे पसन्द की हो या न हो. . . (अध्यापक)

SHRI RANGA (Srikakulam) : Are there political parties there bying with each other as they are doing here ? Are there newspapers which are criticizing their Government as is the case in this country ? Why does he shut his eyes to the fact ?

SHRI DINESH SINGH : We are not discussing here the Soviet system, nor the Indian system; we are discussing a particular fact, a statement made by a Government and how we deal with these state-

ments so far as government to-government relation concerned.

SHRI SURENDRANATH DWIVEDY (Kendrapara) : Do you accept what China says, namely, that they have occupied their own territory ?

SHRI DINESH SINGH : So far as the views of hon. Members are concerned, they have already been fully expressed and will be taken note of everywhere.....

(Interruption).

श्री अटलबिहारी बाजपेयी : मन्त्री महोदय ने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया है। मैंने कहा है कि मास्को रेडियो प्रसारण कर रहा है। मैं यह मानने के लिये तैयार नहीं हूँ कि रेडियो पीस ऐंड प्रोग्रेस पर सरकारी नियन्त्रण नहीं है। लेकिन सरकारी प्रसारण के बारे में मन्त्री महोदय का क्या कहना है ? उनमें कोई राष्ट्रीय गरिमा की भावना है या नहीं ? यहाँ दूसरे देशों की सरकारों से हमें गालियाँ खिलवाई जा रही हैं और विदेश मन्त्री मुंह पर ताला डाले बैठे हैं। इस स्थिति को बर्दाश्त नहीं किया जायगा।

श्री शशि भूषण (झारगोब) : उपाध्यक्ष महोदय, जब वायेस आफ अमेरिका हिन्दुस्तान की सरकारी संस्थाओं के बारे में कहता है खिलाफ क्यों प्रदर्शन नहीं किया जाता। जो भी हमारे मुल्क के खिलाफ कहे, उसका विरोध किया जाना चाहिए।

श्री अटलबिहारी बाजपेयी : अगर वायेस आफ अमेरिका ऐसी बात करता है तो उसका भी विरोध किया जाना चाहिए। यह भी गलत है।

SHRI BAL RAJ MADHOK (South Delhi) : The question is about Russia, not America. If America does it, we can take up that also. Russia has a particular system of government. There is no democracy there. Let him deny that.....

(Interruption)

SHRI DINESH SINGH : I have said in my statement that we had brought this to the notice of the Soviet Government. That is an expression of our concern and unhappiness over this.

SHRI RANGA : What is their reply ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूँ। सबाल को इस तरह से टालने नहीं दिया जायगा। मन्त्री महोदय के उत्तर में मास्को रेडियो का कोई उल्लेख नहीं है। जितना उल्लेख है वह रेडियो पीस एन्ड प्रोग्रेस का है। उस के प्रसारण की ओर सोवियट सरकार का ध्यान दिलाया गया है। मास्को रेडियो सरकार का खुला रेडियो है। उसके बारे में कोई बहानेबाजी नहीं चल सकती। उसके प्रसारण के बारे में मन्त्री महोदय का क्या कहना है ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : So far as Radio Moscow is concerned, Government has expressed its concern. He has said that.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : He has not said it.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Is it not correct that regarding Moscow Radio also you have drawn their attention ?

श्री शिव नारायण (बस्ती) : मैं यह जानना चाहता हूँ कि कांग्रेस प्रेजीडेंट श्री निर्जलिगम्पा के खिलाफ क्या कहा गया है। यह मामूली बात नहीं है। देश का अपमान है।

MR. DEPUTY-SPEAKER : That is not the question.

SHRI DINESH SINGH : Sir, this is the Calling Attention notice in respect of 'Peace and Progress Radio' and, therefore, I have given reply with reference to 'Peace and Progress Radio'. So far as Radio Moscow is concerned, the Soviet Govern-

ment have stated that their Radio does not attack any other Government as such but their Radio is free to express their opinions. Even so, we have expressed our unhappiness that this should not have been done at the time of elections when the different parties were contesting and that their Official Radio as such and their official organ should not do anything.

SHRI D. N. PATODIA (Jalore) : Sir 'Peace and Progress Radio' started its tirade against India's national interests and sentiments two years back. On the floor of this very House, this matter has been raised in many forms on more than one occasion. Four Ministers are already on record having expressed their different views, the Prime Minister, the previous Minister of Information and Broadcasting, Shri K.K. Shah, the previous External Affairs Minister, Shri B. R. Bhagat and the Home Minister, Shri Y. B. Chavan and now he is the fifth Minister giving his views and, along with the coming of the fifth Minister, the Government's position appears to have completely shifted. Therefore, it is necessary for me to quote what the previous Ministers have said on previous occasions before I put a question.

On 7th December, 1967, when a question was put to the Home Minister as to whether the Home Minister treats such an act as friendly or unfriendly, the Home Minister states :

"About this Radio broadcast, we have taken up the matter with the Soviet authorities and when they have said that it is being considered by them it would be rash on my part to come to any conclusion as to whether it is a friendly or unfriendly act."

Then, on the next occasion, on 20th December, 1967, the previous Minister of Information and Broadcasting, Shri K. K. Shah, states as follows :

"Whatever happens on the soil of U. S. S. R. can anybody say that U. S. S. R. is not responsible? That summarises the correct position. Under the political system prevalent in U.S.S.R., it

is the Government of U.S.S.R. which is supposed to sponsor everything that happens on the soil of Russia."

That is how the Government of India is on record and today, by making this statement, the hon. Minister has clearly indicated that the Government of India have permitted the national interests and sentiments of India to be continuously humiliated and interfered with by Soviet Russia. May I, therefore, ask the hon. Minister whether, after making continuous efforts for two years, after making several representations, the Government of India now treats this act as friendly, or unfriendly or whether they would take another 10 years to arrive at a decision about it and, secondly, in view of the fact that they are not stopping this tirade against India's national sentiments, is the Prime Minister prepared to write a personal note to the Prime Minister of U.S.S.R. expressing the sentiments of Indian people and telling them that unless they stop it, it will be considered as an unfriendly act against India ?

SHRI DINESH SINGH : With due respect to the hon. Member, I would request the hon. Member to consider whether the statements that he has read out are really inconsistent. I do not see any inconsistency.

SHRI D. N. PATODIA : They are hundred per cent inconsistent. They are in respect of 'Peace and Progress Radio' made on the floor of the House by the Ministers concerned.

SHRI BAL RAJ MADHOK : Yours is inconsistent with them.

SHRI DINESH SINGH : What I have said and what my colleagues have said are consistent. (*Interruptions*)

SHRI PILOO MODY (Godhra) : Let us listen to his consistency.

SHRI DINESH SINGH : I am very grateful to the hon. Member for making the suggestion. I was thinking of doing it myself. So far as the statement that

the hon. Member has read out which was made by my colleague, the then Minister of Information and Broadcasting, he said that whatever happens on the soil of U.S.S.R., the Soviet Government is responsible. Naturally, they are responsible for what is happening on their soil as we are responsible for what happens on our soil. (*Interruptions*)

SHRI D. N. PATODIA : Under the political system prevalent in USSR, it is the Government of USSR which sponsors everything. ...(*Interruptions*)

SHRI DINESH SINGH : If the hon. Member allows me to complete and then makes his comments, then it will be very much easier for all of us to understand the matter.

What I was saying was this. So far as the Government is concerned, it is responsible for the Government of this country. Whether it wishes to exercise any control or does not wish to exercise any control is a separate issue. So far as we are concerned, we have certain control and we have no control over certain sections which belong to the public like newspapers and others. The Soviet Government have expressed their position that they do not exercise control on these, and this is what I was trying to make out ...(*Interruptions*). This is a statement made by that Government that they do not exercise control on them. It expresses its own opinion. ...(*Interruptions*)

SHRI D. N. PATODIA : It is a question of sponsoring. Here it has been said that under the political system prevalent in the USSR, it is the Government of USSR which is supposed to sponsor everything that happens on the soil of Russia. This was a positive statement made by Shri Shah. Therefore, the Government of USSR has sponsored 'Radio Peace and Progress'.

My second question was whether Government considered this as a friendly act or an unfriendly act and whether the Prime Minister would write a letter.

SHRI DINESH SINGH : It may have sponsored, but it says that it does not wish to exercise any control. What am I to do about that ?

SHRI D. N. PATODIA : What about my second question, whether the Prime Minister would write a letter.....

MR. DEPUTY-SPEAKER : That is a suggestion.

SHRI D. N. PATODIA : What about the second part, whether they consider it to be a friendly act or an unfriendly act?

SHRI DINESH SINGH : Considering an action as an unfriendly act, in the diplomatic language, has a very special connotation. I would not say at this stage that this is an unfriendly act. So far as we are concerned, we have expressed our concern at this and this is what they have said.

SHRI SURENDRANATH DWIVEDI : The position would be clarified if the hon. Minister says whether the plea of the Government of USSR that they do not control 'Radio Peace and Progress' is accepted by him or not.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr. Kanwar Lal Gupta.

श्री कंबरलाल गुप्त (दिल्ली सदर) : जो जवाब मंत्री महोदय ने दिया है उसको सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ है। मुझे ऐसा लगा है कि मंत्री महोदय इस समस्या को ओवर सिम्प्लीफाई कर रहे हैं। ऐसा भी मुझे मायूस हुआ है, मुझे लगा है कि रूस के रोष के कारण भी वह ऐसी भाषा बोल रहे हैं जैसी भाषा रूस के फैंलो ट्रेबलर्ज बोलते हैं। वहां जिस प्रकार का पोलिटिकल सैटअप है उसमें कोई आटोनोमी की बात करे, सम्भव नहीं है। वहां पर रेडियो पीस एण्ड प्रोग्रेस पर सरकार का कंट्रोल न हो, इसको कोई मान नहीं सकता है। आप उपाध्यक्ष महोदय इतिफाक करेंगे कि रूस

ने अपने यहां के रेडियो को तो क्या चैको-स्लोवाकिया के रेडियो तक को कंट्रोल कर रखा है, जो प्राग रेडियो है उसको भी कंट्रोल कर रखा है। दूसरे जो रेडियो हैं उनके ऊपर भी अपना नियंत्रण कर रखा है। इस वास्ते पीस और प्रोग्रेस रेडियो उनके नियंत्रण में नहीं होगा यह चीज सम्भव नहीं है। हम ने जो कुछ भी अपनी एंग्जाइटी शो की और हमारे मंत्री जी ने जो बातचीत की थी उसका रिएक्शन पीस एण्ड प्रोग्रेस रेडियो पर क्या हुआ है, इसको मैं हिन्दुस्तान टाइम्स से जो कि 28 सितम्बर 1968 का है, आप की आज्ञा से थोड़ा सा पढ़ कर बताना चाहता हूँ :

"In a commentary on September 16, Radio Peace and Progress acknowledged the growing criticism of the interference in India's internal politics. It is an interesting coincidence that on that very day Mr. B.R. Bhagat, Minister of State for External Affairs, made a pointed reference to these commentaries at his talks with the Russian Deputy Foreign Minister. The Radio commentary made no reference to the objections raised by the Government of India spokesman from time to time and sought to justify its activities by saying, 'Reactionary circles in India continued their attacks on Radio Peace and Progress. The Swatantra and the Jan Singh are attempting to accuse the Station—which reflects Soviet public opinion—of conducting harmful propaganda against India and interfering in that country's internal affairs. It told its listeners that Americans and local reactionaries or circles were trying to spread slander against the radio station. It made a similar attack on them again on September 23rd.'"

मेरा कहना यह है कि यह सवाल पार्टी का नहीं है, यह सवाल सिद्धान्त का है। मेरा सवाल यह है कि सरकार जो कुछ हो रहा है, मास्को रेडियो कर रहा है या पीस

एण्ड प्रोग्रेस रेडियो कर रहा है, इसको अपने इंटरनल मैटर्ज में इंटरफीयरेंस समझती है या नहीं समझती है? क्या सरकार रूस के दबाव में आकर एंड के कारण या किसी और कारण से अपनी ज़बान बन्द किये रखना चाहती है? क्या यह देश भारत सरकार के अधीन चलता है या इस देश को चलाने के लिए आपने कोई ट्रस्ट बना रखा है? इसका एक तो ट्रस्टी अमरीका बना हुआ है, एक रूस है और एक आप स्वयं बने हुए हैं। यह देश भारत सरकार के अन्दर चलना चाहिए न कि इसको ट्रस्टियों को सौंप दिया जाना चाहिए। इस तरह से देश का काम नहीं चलना चाहिए। मैं सरकार से तीन प्वाइंटिड क्वेश्चन पूछना चाहता हूँ। पहला तो यह है कि जो कुछ मास्को रेडियो ने किया है या पीस एण्ड प्रोग्रेस रेडियो ने किया है, क्या सरकार उसको इंटरनल इंटरफीयरेंस समझती है या नहीं समझती है?

दूसरी बात यह है कि जो जवाब आप को मिला है कि यह आटोनोमस है, उसके बारे में क्या सरकार को तसल्ली है और अगर नहीं है क्योंकि जैसा श्री बी. आर. भगत ने बातचीत की है, उससे मालूम होता है कि सरकार को तसल्ली नहीं है, तो क्या सरकार रूस सरकार को कोई प्रोटैस्ट नोट भेजेगी कि मास्को रेडियो या पीस एण्ड प्रोग्रेस रेडियो ने जो कुछ किया है यह ठीक नहीं है?

मैं इन तीनों सवालों का स्पेसिफिक जवाब चाहता हूँ।

श्री बिनेश सिंह: जहाँ तक इस देश का सम्बन्ध है माननीय सदस्य की बात को सुनकर मैं कुछ ताज्जुब में पड़ गया हूँ। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि वह क्यों इस तरह की एक गलतफहमी पैदा करना चाहते हैं कि इस देश पर किसी और का भी अधिकार

है या किसी और देश से पूछ कर यह सरकार चलती है।

जहाँ तक कि...

श्री कंबरसाल गुप्त: जब सब लोग गालियाँ दे रहे हैं, आपके प्रेजीडेंट को गालियाँ दे रहे हैं, आप ज़बान तक नहीं खोलते हैं। जो हमारे इंटरनल मैटर्ज में इंटरफीयर कर रहे हैं, उनको आप डिफेंड करना चाहते हैं...

श्री बिनेश सिंह: मैं कहूंगा कि हम दोनों एक साथ नहीं बोल सकते हैं। उनके जो मन में आया वह कह गए और मैंने उनकी बात को बहुत ध्यान से सुना। अब वह मुझे भी सुनने की कोशिश करें तो शायद वह समझ जाएंगे कि मैं क्या कह रहा हूँ।

मैं अर्ज कर रहा था कि जहाँ तक हमारे देश का सम्बन्ध है, यहाँ जनता की चुनी हुई सरकार है और वह ही इस देश को चला रही है। और माननीय सदस्य ने इसको कई बार आजमा कर देख भी लिया है और जान भी गए हैं कि यह सरकार इस देश की चुनी हुई है और कहीं बाहर से नहीं आई है।

जहाँ तक इस का सम्बन्ध है कि रेडियो पीस एण्ड प्रोग्रेस ने जो किया है वह हस्तक्षेप है हमारे देश में या नहीं, इसके बारे में मैं कहना चाहता हूँ कि इस तरह का जो प्रचार होता है, कोई देश हमारे देश के खिलाफ करता है, जो हमारी संस्थायें हैं, सामाजिक और राजनीतिक, उनके खिलाफ करता है, तो हम इसमें से किसी को पसन्द नहीं करते हैं और जब हमें मौका मिला है हमने इस पर बातचीत की है। कोई देश अपने यहाँ किस तरह से अपनी संस्थाओं को चलाना चाहता है यह उस देश का अपना काम है, इससे उस देश का सम्बन्ध है। जिस तरह से हम अपने देश में अपनी संस्थाओं को

[श्री दिनेश सिंह]

चलाने के लिए आजादी चाहते हैं उसी तरह से वे भी चाहते हैं।

माननीय सदस्य ने विरोध पत्र भेजे जाने की बात भी कही है। उन्होंने देखा होगा कि हमने बहुत ऊँचे स्तर पर यह बात उठाई है। कागज पर लिख देने से उमका कोई सम्बन्ध नहीं है। बहुत ऊँचे स्तर पर हम ने उसको उठाया है और कहा है कि इस तरह का जो प्रचार है उससे दोनों देशों के सम्बन्धों को कोई फायदा नहीं होता है, वे मजबूत नहीं होते हैं। सोवियत सरकार का इस पर नियंत्रण है या नहीं, इसको बिना उठाये हुए हम उन से चाहते हैं कि इस तरह का जो प्रचार है इसको उनको रोकना चाहिये।

श्री कंबरलाल गुप्त : उपाध्यक्ष महोदय, मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया गया है।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The hon. Member may not be satisfied, but the hon. Minister has replied already.

श्री कंबरलाल गुप्त : मैंने यह पूछा है कि रूस की तरफ से जो जवाब दिया गया है, क्या सरकार उस से सैटिसफाइड है। मैंने यह भी पूछा है कि क्या सरकार इसको हमारे इनटर्नल मामलों में इन्टरफीयरेंस समझती है या नहीं। वह अच्छा है या बुरा, यह सवाल नहीं है। सवाल यह है कि क्या वह हमारे आन्तरिक मामलों में इन्टरफीयरेंस है या नहीं। मैंने ये पार्यटिड सवाल पूछे हैं। मिनिस्टर साहब को उन के जवाब को इवेड नहीं करना चाहिए।

SHRI PILOO MODY: It is a moment of conscience; let him reply to the question.

श्री दिनेश सिंह : अगर हम उस से संतुष्ट होते, तो फिर उन्हें कहने की क्या जरूरत थी? मैं कई मर्तबा कह चुका हूँ। पता नहीं, माननीय सदस्य क्या चाहते हैं कि

मैं इस बारे में क्या कहूँ। जहाँ तक हस्तक्षेप का सवाल है, वे वहाँ पर अपने विचार प्रकट करते हैं और हम उस को पसन्द नहीं करते हैं। (व्यवधान)

SHRI KANWAR LAL GUPTA: He has not replied to the question that I had asked.

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has replied to it in a different manner.

श्री श्रीचन्द गोयल (चण्डीगढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, मुझे हैरानी है कि हमारे कांग्रेसी भाई इस प्रश्न पर दलगत विचार-धारा से विचार करते हैं। श्री शिव नारायण के स्वाभिमान की रग तब फड़की, जब उन्होंने श्री निर्जलिंगप्पा का नाम सुना। चाहे श्री निर्जलिंगप्पा की आलोचना हो और चाहे श्री अटल बिहारी वाजपेयी की, हमारे लिए यह प्रश्न राष्ट्र के अन्दरूनी मामलात में हस्तक्षेप का प्रश्न है। रेडियो पीस एण्ड प्रोग्रेस ने पिछले दो तीन वर्षों से भारतवर्ष के अन्दरूनी मामलात में दखल देना प्रारम्भ किया है। आप को याद होगा कि जिस समय रूसी सेनाओं ने चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण किया था, उस समय भारतवर्ष के देश-भक्तों ने उस के विरोध में भारी प्रदर्शन किया था। उससे असंतुष्ट हो कर रेडियो पीस एण्ड प्रोग्रेस ने भारत के अनेक देशभक्तों श्री हेम बरुआ, श्री सी० सी० देसाई और श्री मनोहरलाल सौधी आदि इस सदन के माननीय सदस्यों के नाम ले लेकर उनकी आलोचना की थी। 1967 के आम चुनावों के अवसर पर भी उस ने इस देश के विभिन्न दलों की नीतियों और कार्यक्रमों की आलोचना करके हमारे आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप किया था। कांग्रेसी सदस्य इस को जनसंघ की आलोचना का प्रश्न न बनायें।

मैं इस बारे में कुछ उदाहरण देना चाहता हूँ। 17 जुलाई, 1967 के स्टेट्समैन ने रिपोर्ट किया था :

"A broadcast by Radio Peace and Progress from Tashkent stated that lawlessness in the Naxalbari area was an agrarian movement".

इसी तरह 1 दिसम्बर, 1967 के हिन्दुस्तान टाइम्स ने रिपोर्ट किया था :

"Radio Peace and Progress in its latest broadcast has openly abused the Government of India for dismissal of the communist-dominated West Bengal Government."

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) : Very correctly.

श्री श्रीचन्द्र गोयल : 9 दिसम्बर, 1967 को करेन्ट ने इस तरह रिपोर्ट किया था :

"What is worrying Mrs Gandhi most is not the situation in West Bengal but the Soviet reaction to it. She recently told one of her confidants that the dismissal in Bengal had caused dismay in Moscow."

पिछले दो वर्षों से यह कहानी दोहराई जा रही है। पिछले सूचना और प्रसारण मंत्री, श्री के० के० शाह, ने यह स्वीकार किया था कि यह हमारे अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप है। मैं 6 मार्च, 1968 को लोक सभा में दिये गये उन के भाषण में से एक उद्धरण पेश करना चाहता हूँ :

"I have no hesitation in saying that neither Radio Peace and Progress nor anybody outside this country has a right to criticise any person in this country or any citizen of this country. I am at one with my hon. friend in voicing my resentment against any interference whatsoever by outside agencies in the affairs of this country."

जब पिछले सूचना और प्रसारण मंत्री यह स्वीकार कर चुके हैं कि विदेशों की तरफ से भारत के किसी भी नागरिक अथवा किसी भी संस्था की आलोचना हमारे आन्तरिक

मामलों में हस्तक्षेप है, तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि हमारे आज के बौद्धिक कार्य मंत्री क्या हमारी इस बात से सहमत हैं कि रेडियो पीस एण्ड प्रोग्रेस की तरफ से किया जाने वाला यह प्रचार हमारे आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप है।

सरकार की तरफ से यह डिफेंस लिया जाता है कि रेडियो पीस एण्ड प्रोग्रेस एक स्वायत्त निगम है और उस के कारण रूस सरकार का उस पर नियन्त्रण नहीं है। मैं कहना चाहता हूँ कि रूस सरकार ने जान बूझ कर यह स्वायत्त निगम प्रारम्भ किया था, ताकि वह इसके माध्यम से दूसरे देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप कर सके। क्या भारत सरकार आज इतनी निर्बल, दुर्बल और नपुंसक हो गई है कि दूसरे देश हमारे आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करें और हम उस का उचित विरोध न कर सकें, इस प्रश्न को उन के साथ उचित स्तर पर हल न कर सकें ? आखिर मित्रता की जितनी हमें चिन्ता है, उन्हीं भी तो उतनी चिन्ता होनी चाहिए। मंत्री महोदय ने कहा है कि सरकार ने इस सिलसिले में उचित कदम उठाये हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि सरकार ने कौन सी तारीख से, किस भाषा में, किन शब्दों में इस बारे में विरोध प्रकट किया है और किस विभाग के साथ इस बारे में बात की है।

MR. DEPUTY-SPEAKER : He should avoid words like *napumsak*; it is not proper.

श्री विनेश सिंह : जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि किस भाषा में बातचीत की है, मैं समझता हूँ कि अंग्रेजी में बात की है। जहां तक शब्दों का सम्बन्ध है, इस वक्त मुझे याद नहीं है कि मेरे साथी, उस वक्त के राज्य मंत्री, ने किन शब्दों में कहा, लेकिन उस का मतलब मैं मदन को बता चुका हूँ।